लखनऊ विश्वविद्यालय
University of Lucknow
(Accredited A++ by NAAC)

University in News on 14 September 2023

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

लविवि : जल्द मूल्यांकन के लिए अब सॉफ्टकॉपी में जमा की जाएगी थीसिस

तीन से चार वर्ष में थीसिस जमा करने पर छात्रों को एक ही शोध पत्र प्रकाशित करना होगा

संवाद न्यूज एजेंसी

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में अब पीएचडी थीसिस का मूल्यांकन होने में अधिक समय नहीं लगेगा और विद्यार्थियों को समय से पीएचडी अवॉर्ड हो जाएगी। इस प्रक्रिया को अमल में लाने के लिए विवि प्रशासन अब मूल्यांकन के लिए सॉफ्ट कॉपी में पीएचडी थीसिस जमा करवाएगा।

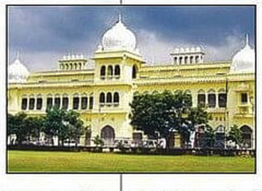

लविवि में मंगलवार को एकेडमिक काउंसिल की बैठक में इन सुधारों के साथ नए पीएचडी अध्यादेश को स्वीकृति मिल गई। इस अध्यादेश में विद्यार्थियों के थीसिस जमा करने की न्यूनतम अवधि तीन वर्ष और अधिकतम छह वर्ष तय की गई है।

यदि विद्यार्थी तीन से चार वर्ष में थीसिस जमा कर देता है तो उसे एक ही शोध पत्र प्रकाशित करना होगा। चार से पांच वर्ष में थीसिस जमा करने पर दो शोध पत्र और पांच से छह वर्ष में थीसिस जमा करने पर तीन शोध पत्र जमा करने होंगे। प्रवक्ता डॉ. दुर्गेश श्रीवास्तव ने कहा कि इन बदलावों से विद्यार्थियों की शोध गुणवत्ता में सुधार होगा और उन्हें समय से पीएचडी पूरी करने में भी मदद मिलेगी।

बीटेक, बीफार्मा एमसीए की कटऑफ जारी

संवाद न्यूज एजेंसी

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय ने बुधवार को बीटेक, बीफार्मा व एमसीए की कटऑफ जारी कर दी। सूची में चयनित विद्यार्थियों को विवि की वेबसाइट पर ऑनलाइन फीस जमा करनी होगी। इसके बाद वे रैंक के हिसाब से 16 व 17 सितंबर को नवीन परिसर स्थित इंजीनियरिंग संकाय में काउंसिलिंग में शामिल हो सकते हैं। प्रवक्ता डॉ. दुर्गेश श्रीवास्तव ने बताया कि अभ्यर्थी काउंसिलिंग स्थल पर भी ऑनलाइन फीस जमा कर सकते हैं। प्रतीक्षा सूची के अभ्यर्थियों को समय से काउंसिलिंग स्थल पर जाकर रिपोर्ट करना होगा, जिससे खाली सीटों पर प्रपत्रों की जांच के बाद उन्हें प्रवेश दिया जा सके।

विश्व के शीर्ष दो प्रतिशत वैज्ञानिकों में लखनऊ विश्वविद्यालय के तीन शिक्षक

लखनऊ। विश्व के शीर्ष दो प्रतिशत वैज्ञानिकों की सूची में लविवि के विज्ञान संकाय के तीन शिक्षकों ने स्थान बनाया है। स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय की ओर से जारी सूची में लविवि के एप्लाइड फिजिक्स विभाग के प्रो. एके श्रीवास्तव, बायोकेमिस्ट्री एंड मॉल्यूक्यूलर विभाग के प्रो. दीपक कुमार और ऑर्गेनिक केमिस्ट्री के विष्णु जी राम हैं। (संवाद)

एमबीए में दूसरा, एमएससी में तीसरा सीट आवंटन जारी

लविवि के प्रवेश विभाग ने परास्नातक प्रवेश प्रक्रिया के तहत बुधवार को एमबीए-एमएफए का दूसरा और एमएससी बॉटनी एवं एमएससी स्टैटिक्स में तीसरा सीट आवंटन जारी कर दिया। अभ्यर्थी विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर सीट आवंटन से जुड़ा विवरण देख सकते हैं। दोनों पाठ्यक्रमों में 16 सितंबर की मध्यरात्रि तक फीस जमा की जा सकती है। इन विषयों की कटऑफ सूची भी जारी कर दी गई है।

लविवि के आईएमएस में अब फ्रेंच और जर्मन की भी पढ़ाई

लखनऊ। लविवि के आईएमएस संस्थान (इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट साइंस) में अगले सत्र से कोर्स वर्क में फ्रेंच और जर्मन भाषा की पढ़ाई भी कराई जाएगी। इन दोनों भाषाओं की पढ़ाई एमबीए और बीबीए के तीसरे सेमेस्टर में करवाई जाएगी। संस्थान की ओर से इसका सिलेबस तैयार करने और फैकल्टी बोर्ड से पास होने के बाद एकेडमिक काउंसिल की बैठक में इस पर मुहर लगा दी गई। आईएमएस की ओएसडी डॉ. विनीता काचर ने बताया कि नई शिक्षा नीति के अनुरूप सिलेबस तैयार किया गया है। संस्थान के सभी विशेषीकृत पाठ्यक्रमों के सिलेबस में बदलाव किया गया है। बीबीए, एमबीए आईबी, एचआर और कोर पाठ्यक्रम में दोनों भाषाएं पढ़ाई जाएंगी। आर्ट्स कॉलेज के ललित कला संकाय में नए विभाग क्राफ्ट एंड डिजाइन का सृजन किया जाएगा। इसमें बैचलर ऑफ डिजाइनिंग का पाठ्यक्रम शुरू होगा। (संवाद)

HINDUSTAN PAGE 6

एलयू से अब घर बैठे कर सकेंगे पीजी कोर्स

सुविधा

- एकेडमिक काउंसिल की आठ कोर्सों को ऑनलाइन शुरू करने पर मंजूरी
- ललित कला संकाय में टेक्सटाइल डिजाइन कोर्स शुरू होगा

लखनऊ, संवाददाता। लखनऊ विश्वविद्यालय से अब घर बैठे पीजी के कई पाठ्यक्रमों की डिग्री हासिल कर सकेंगे। एकेडमिक काउंसिल ने पीजी के आठ पाठ्यक्रमों को ऑनलाइन माध्यम से शुरू करने की मंजूरी दी गई है।

एलयू में प्रथम चरण में परास्नातक पाठ्यक्रमों को ऑनलाइन माध्यम से शुरू किया जाएगा। एकेडमिक काउंसिल ने कला संकाय में एआईएच, राजनीति विज्ञान, संस्कृत, अंग्रेजी, अर्थशास्त्र व समाज कार्य विषय में एमए कोर्स शुरू करने पर मुहर लगाई। इसी तरह वाणिज्य संकाय में एमकॉम कॉमर्स और प्रबंधन में एमबीए पाठ्यक्रम शुरू करने की अनुमति प्रदान की।

ललित कला संकाय में पीजी स्तर पर टेक्सटाइल डिजाइन का कोर्स शुरू किया जाएगा। इसमें पांच सीटें होंगी। बता दें, एकेडमिक काउंसिल की बैठक में बैचलर ऑफ डिजाइन शुरू करने के लिए भी भेजा गया था। लेकिन उसे संकाय में नहीं शुरू किया जा सकता।

एलयू में संगीत की भी पढ़ाई हो सकेगी

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में संगीत की पढ़ाई भी होगी। इसके लिए पाठ्यक्रम बनाया जा रहा है। एलयू के ललित कला संकाय में संगीत का एक अलग विभाग खोलने की योजना बनाई जा रही है। आर्ट्स कॉलेज के पिछले हिस्से पर खाली पड़ी जमीन पर निर्माण कराकर संगीत की कक्षाएं चलाने का प्लान तैयार किया गया है, जिसे संकायाध्यक्ष द्वारा अंतिम रूप दिया जा रहा है। संगीत विभाग में वोकल और इंस्ट्रूमेंटल दोनों तरह के कोर्स चलाए जाएंगे।

एमएससी, एमबीए में सीटें आवंटित की गईं

एलयू में एमबीए/एमएफए पाठ्यक्रम में दूसरी बार सीटें आवंटित कर दी गई हैं। इसी तरह एमएससी बॉटनी या माइक्रोबायोलॉजी और एमएससी स्टेटिस्टिक्स या बायोस्टेटिस्टिक्स का तीसरा सीट अलॉटमेंट किया गया है।

बीटेक, बीफार्मा व एमसीए की कट ऑफ जारी

बीटेक, बीफार्मा और एमसीए पाठ्यक्रम की कट ऑफ जारी कर दी गई है। 16 व 17 सितंबर को नवीन परिसर में काउंसलिंग का आयोजन किया जाएगा।

अंग्रेजी के शिक्षक को हिन्दी में राष्ट्रीय पुरस्कार

एलयू के अंग्रेजी विभाग के प्रोफेसर रवीन्द्र कुमार सिंह को हिंदी भाषा में भी महारत हासिल है। उन्होंने हिंदी भाषा में तीन राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार प्राप्त किए हैं। लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर आरपी सिंह ने अंग्रेजी और हिंदी लेखन में समान रूप से सक्रिय हैं। इनकी हिंदी-अंग्रेजी कविताएं लगभग 20 साझा संकलनों में हैं। प्रोफेसर सिंह ने हिंदी और अंग्रेजी में बाल साहित्य के तहत लगभग 50 नाटक भी लिखे हैं। प्रो. आरपी सिंह को हिंदी संस्थान के द्वारा मोहन राकेश, डॉ. राम कुमार वर्मा बाल नाटक और भारतेंदु हरिश्चंद्र सम्मान सहित 23 पुरस्कार मिले हैं।

i-NEXT PAGE 4

पीएचडी थीसिस 3 साल में करें जमा

एलयू ने पीएचडी के नए अध्यादेश में किया गया प्राविधान

LUCKNOW (13 Sept): एलयू ने एकेडमिक काउंसिल में पास किए गए पीएचडी के नए अध्यादेश-2023 में कई नए प्राविधान किए हैं. अब पीएचडी थीसिस कम से कम तीन साल में जमा कर सकेंगे. वहीं, अधिकतम समय छह साल तक का रहेगा.

समय सीमा बढ़ाई गई

डीन एकेडमिक्स प्रो. गीतांजलि मिश्रा ने बताया कि अभी तक दो साल में थीसिस जमा करने का प्राविधान था, जिसे बढ़ा दिया गया है. थीसिस के जल्द मूल्यांकन के लिए थीसिस साफ्ट कापी में जमा करवाई जाएगी. कोर्स वर्क को आठ क्रेडिट की जगह अब 12 क्रेडिट का प्राविधान कर दिया गया है. शोध की गुणवत्ता को बढ़ावा देने के लिए थीसिस मूल्यांकन के पैनल के लिए अंतरराष्ट्रीय परीक्षकों की नियुक्ति भी शुरू की गई है.अब प्रत्येक शोधार्थी को एक सुपरवाइजर के साथ दो सह सुपरवाइजरों की अधिकतम अनुमति दी जाएगी.

JAGRAN CITY PAGE III

तीन साल में जमा कर सकेंगे पीएचडी थीसिस

जागरण संवाददाता, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय ने एकेडमिक काउंसिल में पास किए गए पीएचडी के नए अध्यादेश-2023 में कई नए प्रविधान किए हैं। अब पीएचडी थीसिस कम से कम तीन साल में जमा कर सकेंगे। वहीं, अधिकतम समय छह साल तक रहेगा।

डीन एकेडमिक्स प्रोफेसर गीतांजलि मिश्रा ने बताया कि अभी तक दो साल में थीसिस जमा करने का प्रविधान था, जिसे बढ़ा दिया गया है। थीसिस के शीघ्र मूल्यांकन के लिए थीसिस साफ्ट कापी में जमा करवाई जाएगी। कोर्स वर्क को आठ क्रेडिट की जगह अब बारह क्रेडिट का प्रविधान कर दिया गया है। शोध की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए थीसिस मूल्यांकन के पैनल के लिए अंतरराष्ट्रीय परीक्षकों की नियुक्ति भी शुरू की गई है।

दो सह-सुपरवाइजर की अनुमति : अब प्रत्येक शोधार्थी को एक सुपरवाइजर के साथ दो सह-सुपरवाइजरों की अधिकतम अनुमति दी जाएगी। ये सह-सुपरवाइजर विभिन्न शैक्षिक संस्थानों या विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों से भी हो सकते हैं। सुपरवाइजरों की संख्या में वृद्धि का उद्देश्य छात्र को शोध के दौरान विभिन्न अनुभवों, ज्ञान, सुविधाओं और क्षमताओं का उपयोग करने और अनुसंधान के अंतःविषय स्वरूप को बढ़ावा देने के लिए है। उन्होंने बताया कि नवीन अध्यादेश में शोध प्रकाशन नैतिकता और अनुसंधान पद्धति और नवीन अनुसंधान दृष्टिकोण जैसे पाठ्यक्रम शामिल किए गए हैं।

लवि में व्याख्यान

जासं, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग में बुधवार को हुए व्याख्यान के अंतर्गत "विकास के अवधारणा" विषय पर सामूहिक चर्चा हुई। इसमें लवि के आर्ट्स, कामर्स, साइंस, मैनेजमेंट विभागों के प्रतिभागियों ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर डा. रजनी श्रीवास्तव सहित विभाग के प्रोफेसर, शोधार्थी, स्नातक तथा परास्नातक के छात्र उपस्थित रहे।

हास्टल आवंटन की सूची जारी

जासं, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय ने बुधवार को विभिन्न पाठ्यक्रमों में तीसरे व पांचवें सेमेस्टर के छात्र-छात्राओं का पुन : हास्टल आवंटन कर दिया। वेबसाइट पर इसकी सूची जारी कर दी है। इसमें बी.काम तीसरे-पांचवें सेमेस्टर, बी.ए. तीसरे-पांचवें, बी.एससी. बायो, एम.एससी. बायो पांचवें, बी.एससी. बायो तीसरे, मैथ्स तीसरे, बी.बीए तीसरे,पांचवें, बी.सीए तीसरे, पांचवें, बी.काम. आनर्स पांचवें गर्ल्स, बी.पीएड तीसरे, बी.वीए सातवें, बी.एड तीसरे की छात्राएं व बी.बीए तीसरे-पांचवें व बी.सीए तीसरे-पांचवें सेमेस्टर के ब्वायज आदि शामिल हैं। सभी को 17 सितंबर तक फीस जमा करने के लिए कहा गया है।

सीट आवंटन जारी

लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय ने बुधवार को एमबीए/ एमएफए में दूसरा, एम.एससी बाटनी, एम.एससी माइक्रोबायोलाजी, एम.एससी सांख्यिकी/बायोस्टैटिस्टिक्स में तीसरा सीट आवंटन का परिणाम जारी कर दिया। अभ्यर्थी अपने लागइन पर इसका परिणाम देख सकते हैं। सीट पाने वाले अभ्यर्थियों को 16 सितंबर को रात 12 बजे तक फीस जमा करने का मौका दिया गया है। (जासं)

एलएलबी, एमबीए में तीसरा सीट आवंटन जारी

लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय ने एलएलबी (तीन वर्षीय) और एमबीए, एमटीटीएम पाठ्यक्रम में दाखिले के लिए खाली सीटों के सापेक्ष तीसरा सीट आवंटन जारी कर दिया है। आवंटित सीट की फीस 16 सितंबर को रात 12 बजे तक जमा की जा सकती है। (जासं)

PIONEER PAGE 3

शोध के लिए शोधार्थी को मिलेंगे सुपरवाइजर के साथ दो-सह सुपरवाइजर

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

वर्तमान पीएचडी अध्यादेश में संसोधन के जरिए शोध करने वाले छात्रों को एक सुपरवाइजर के साथ लखनऊ विश्वविद्यालय अधिकतम दो सह सुपरवाइजर भी उपलब्ध करायेगा। सह-सुपरवाइजर विभिन्न शैक्षिक संस्थानों से हो सकते हैं या विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों से भी हो सकते हैं। सुपरवाइजरों की संख्या में वृद्धि का उद्देश्य छात्र को शोध के दौरान विभिन्न अनुभवों, ज्ञान, सुविधाओं और क्षमताओं का उपयोग करने और अनुसंधान के अंत:विषय स्वरूप को बढ़ावा देने के लिए है। नए पीएचडी अध्यादेश का मुख्य फोकस नवाचार, अकादमिक उत्कृष्टता और परामर्श की संस्कृति को बढ़ावा देना है। शोध के लिए पीएचडी में प्रवेश परीक्षा और साक्षात्कार आयोजित करने की परंपरा को जारी रखते हुए अध्यादेश में स्नातक महाविद्यालयों के शिक्षकों को पीएचडी गाईड बनने की अनुमति देने के साथ-साथ पीएचडी के दौरान छात्र अनुभव और अनुसंधान की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए कई नई पहल की गई हैं। अधिष्ठाता अकादमिक, प्रोफेसर गीतांजलि मिश्रा ने बताया कि हम उम्मीद करते हैं कि हमारे शिक्षक और छात्र इस अवसर का उपयोग ज्ञान की विभिन्न विधाओं से जुड़ने के लिए करेंगे, जिससे वे वैश्विक दर्जे के समाजोपयोगी अनुसंधान कर सकें। नवीन अध्यादेश में शोध प्रकाशन नैतिकता और अनुसंधान पद्धति और नवीन अनुसंधान दृष्टिकोण जैसे पाठ्यक्रम शामिल किये गए हैं और कोर्स वर्क को आठ क्रेडिट की जगह बारह क्रेडिट का किया गया है। शोध की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए थीसिस मूल्यांकन के पैनल में जहाँ तक संभव हो अंतरराष्ट्रीय परीक्षकों की नियुक्ति भी शुरू की गयी है।

THE PIONEER PAGE 3

Lucknow University expands academic horizon

Lucknow (PNS): Recognising the importance of global perspectives and cross-cultural experiences, Lucknow University has placed in its academic council the regulations for attaining twinning, joint and dual degree programmes across various disciplines.

These programmes will enable students to earn multiple degrees concurrently, thereby enhancing their academic and career prospects.

These innovative academic pathways provide students with unique opportunities to broaden their horizons and acquire international exposure while pursuing their higher education goals.

"Lucknow University has formulated these regulations in consonance with that of UGC (University Grants Commission), which were announced almost a year back. Under the twinning programme, Lucknow University students may study partly in India and in foreign institutions but the degree will be awarded by Lucknow University itself. For joint degrees, both universities will jointly design the curriculum and a joint single certificate will be awarded with the names of both the institutions. For a joint degree, students must earn at least 30 per cent of the total credits from each of the Indian and foreign institutions. For dual degree programmes, both institutions will confer the degree separately and simultaneously on completion of the degree requirements of both institutions," a faculty member said.

He said that such programmes would allow a student to pursue two degrees for a course of the same discipline and at the same level. However, students must earn at least 30 per cent of total credits at Lucknow University.

"Lucknow University is eligible to launch this course because of the NAAC A++ grade that it obtained last year. All Indian institutions with a NAAC score of 3.01 on a scale of 4 or figuring in the QS World University ranking or among the top 100 in the university category of NIRF are eligible," the faculty member said.

"We are committed to creating more opportunities for students and we want to give them the best of all academic worlds. We are seeking and forging more and more international partnerships for this purpose. Our thrust is currently on encouraging more collaborations with foreign universities for the benefit of our students," said LU Vice-Chancellor Prof. Alok Kumar Rai.

"Through these programmes, students gain exposure to diverse teaching methods, cultures and perspectives, fostering a holistic educational experience," says Prof Geetanjali Mishra, Dean, Academics.

These degrees will also be designed to be more cost effective than a degree from a purely foreign institution, while giving the students an international exposure and access to global education without a substantial financial burden along with enhanced employability.

LU new PhD Ordinance

Lucknow (PNS): The Lucknow University academic council has passed the new PhD Ordinance.

"The primary focus of the PhD Ordinance 2023 is to foster a culture of innovation, academic excellence and mentorship, and the new initiatives reflect the university's dedication to providing the doctoral candidates with the best possible research experience," said a faculty member.

While continuing with the good tradition of conducting admission test and review based admission to PhD programmes and allowing faculty from undergraduate colleges to supervise doctoral research, many new initiatives have been taken to further improve the student experience during the doctoral programme and also the quality of research.

AMRIT VICHAR PAGE 4

पुस्तकों के महत्व के बारे में बताया

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के जंतु विज्ञान विभाग में बीएससी और एमएससी प्रथम सेमेस्टर के छात्रों को पुस्तकों के महत्व के बारे में प्रोफेसर ओमकार ने बताया। विभागाध्यक्ष प्रो. संगीता रानी ने विद्यार्थियों से संकाय सदस्यों का परिचय कराया।

इस दौरान प्रो. निरुपमा अग्रवाल, डॉ. आशीष कुमार आदि मौजूद रहे। दूसरी ओर प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग में परास्नातक प्रथम सेमेस्टर के छात्रों को प्रो. पीयूष भार्गव ने पूर्व अध्यक्षों के बारे में बताया। छात्रों को प्राचीन भारतीय इतिहास विषय के बारे में बताने के साथ ही उनको उत्साहित किया गया।

अंतरराष्ट्रीय परीक्षक करेंगे थीसिस का मूल्यांकन

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

लविवि

- शीघ्र मूल्यांकन के लिए अब थीसिस सॉफ्ट कॉपी में जमा करनी होगी
- नए अध्यादेश में स्नातक महाविद्यालयों के शिक्षकों को पीएचडी गाइड बनने की दी गई अनुमति
- अब शोध प्रबंध जमा करने की न्यूनतम अवधि तीन साल और अधिकतम छह वर्ष होगी

अमृत विचार : लखनऊ विश्वविद्यालय में शोध की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए पीएचडी के थीसिस मूल्यांकन के लिए पैनल में अंतरराष्ट्रीय परीक्षकों की नियुक्ति शुरू की गई है। साथ ही शोध जमा करने की न्यूनतम अवधि तीन वर्ष और अधिकतम अवधि छह वर्ष रहेगी।

प्रवेश और शोध के लिए नया अध्यादेश (2023) लविवि में एकेडमिक काउंसिल की बैठक में मंगलवार को पारित किया गया। नए अध्यादेश में शोध प्रकाशन नैतिकता और अनुसंधान पद्धति एवं नवीन अनुसंधान दृष्टिकोण जैसे पाठ्यक्रम शामिल किए गए हैं। साथ ही कोर्स वर्क को आठ क्रेडिट की जगह बारह क्रेडिट किया गया है। थीसिस जल्दी जमा करने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए कम संख्या में अनिवार्य शोध प्रकाशन शामिल किए हैं। तीन से चार वर्ष में थीसिस जमा करने वाले छात्र को केवल एक शोध पत्र प्रकाशित करना होगा, जबकि चार से पांच वर्ष में जमा करने वाले को दो शोध पत्र की आवश्यकता होगी और पांच से छह वर्ष में तीन शोध पत्र की आवश्यकता होगी। थीसिस के शीघ्र मूल्यांकन के लिए अब थीसिस सॉफ्ट कॉपी में भी जमा करनी होगी।

नए अध्यादेश में स्नातक महाविद्यालयों के शिक्षकों को पीएचडी गाइड बनने की अनुमति दी गई है। प्रत्येक छात्र को एक सुपरवाइजर के साथ दो सह-सुपरवाइजरों की अनुमति दी जाएगी।

सुपरवाइजरों की संख्या में वृद्धि का उद्देश्य छात्र को शोध के दौरान विभिन्न अनुभवों, ज्ञान, सुविधाओं और क्षमताओं का उपयोग करने और अनुसंधान के अंतःविषय स्वरूप को बढ़ावा देने के लिए है। अधिष्ठाता अकादमिक, प्रो. गीतांजलि मिश्रा ने कहा कि शिक्षक और छात्र इस अवसर का उपयोग ज्ञान की विभिन्न विधाओं से जुड़ने के लिए करेंगे। इससे वे वैश्विक दर्जे के समाजोपयोगी अनुसंधान कर सकेंगे।

LOKSATYA PAGE 2

जंतु विज्ञान विभाग के बारे में बताया

लखनऊ, लोकसत्य

लखनऊ विश्वविद्यालय के जन्तु विज्ञान विभाग में बीएससी और एमएससी सेमेस्टर फर्स्ट के स्टूडेंट्स के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम हुआ। विभागाध्यक्ष प्रो संगीता रानी ने स्टूडेंट्स का स्वागत किया और संकाय सदस्यों का परिचय कराया। प्रो ओमकार ने शिक्षण के तरीकों और गूगल की तुलना में शिक्षाविदों में पुस्तकों के महत्व के बारे में जानकारी दी।

विभाग की वरिष्ठतम प्रो निरूपमा अग्रवाल ने विभाग के पूर्व विभागाध्यक्षों, शिक्षकों और उनके महत्वपूर्ण योगदान के बारे में विस्तार से जानकारी दी। डॉ आशीष कुमार एसोसिएट प्रोफेसर ने एक विषय के रूप में जन्तु विज्ञान की झलक दी। संग्रहालय का एक आभासी दौरा कराया। जिसमें परिरक्षित जन्तु, टैक्सीडर्मीड जन्तु और कंकाल शामिल हैं। पुस्तकालय, कक्षाओं, केन्द्रीय प्रयोगशाला, सुविधा, कम्प्यूटर सुविधा, सभागार और समिति कक्ष का दौरा आयोजित किया गया। समारोह में भाग लेने वाले सभी 250 छात्र/छात्राओं को जलपान भी कराया गया।

प्राचीन भारतीय इतिहास व पुरातत्व विभाग में ओरिएंटेशन कार्यक्रम

प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग में परास्नातक प्रथम सेमेस्टर के स्टूडेंट्स के लिए ओरिएंटेशन प्रोग्राम में विभाग के सभी शिक्षक मौजूद थे। विभाग के अध्यक्ष प्रो पीयूष भार्गव ने विभाग के पूर्व अध्यक्षों के बारे में बताया। विभाग 1952 से शुरू हुआ इसका उल्लेख उन्होंने किया। सभी शिक्षकों ने अलग अलग यह बताया कि वह कौन-कौन सा पेपर उनको पढ़ाएंगे।उपस्थित छात्रों को प्राचीन भारतीय इतिहास विषय के बारे में विस्तृत रूप से बताया गया और उनको उत्साहित भी किया गया। उन्हें यह बताया गया कि इस विषय से परास्नातक के पश्चात भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, विभिन्न राज्यों के पुरातत्व विभाग, राष्ट्रीय और राज्य संग्रहालय में नियुक्ति योग्यता के आधार पर प्राप्त कर सकते हैं।

SWATANTRA BHARAT PAGE 2

लविवि के छात्र-छात्राओं की टीम देश के प्रतिष्ठित संस्थानों में करेंगी प्रतिभाग

स्वतंत्र भारत संवाददाता लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालयी के संस्कृति प्लेटफार्म सांस्कृतिकी में 30 सदस्यीय नये बैच के छात्र-छात्राओं की एक टीम बनायी गई। इस संबंध में लविवि प्लेसमेंट सेल की निदेशिका डॉ.मधुरिमा लाल ने बताया कि नये सत्र के कार्यक्रमों की तैयारी शुरू कर दी गई है। इस टीम में हर संकाय की प्रतिभागियों को आवश्यक रूप से लिया गया है। वहीं, टीम में सांस्कृतिकी के सात क्लब के तहत छात्र-छात्राओं को विभिन्न कलाओं में ट्रेनिंग दी जाएगी। साथ ही प्रतियोगिताओं और समारोह में प्रतिभाग करने के लिए इन को तैयार किया जायेगा। डॉ.मधुरिमा ने बताया कि जल्द शीघ्र ही लविवि के छात्र देश के विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों में प्रतिभाग करेंगे।